गुप्त कलीसिया–7

स्वर्गदूत, दुष्टात्माएं तथा आत्मिक युद्ध

डॉ. डेविड प्लॉट

Part 4

मसीह और आत्मिक युद्ध

पूर्ण युद्ध...

अब हम प्रभु यीशु को देखेंगे। नये नियम में दृश्य सर्वथा भिन्न है। ऐसा प्रतीत होता है कि पुराने नियम की तुलना में प्रभु यीशु पूरे समय दुष्टात्माएं निकालने में लगा हुआ है। ऐसा अन्तर क्यों है?

मैं चाहता हूं कि आप सुसमाचारों में मसीह का वर्णन देखें। प्रभु यीशु के जीवन के आरंभ ही में हेरोदेस ने उसे मारना चाहा था– मत्ती 2:16–18, "जब हेरोदेस ने यह देखा, कि ज्योतिषियों ने उसके साथ धोखा किया है, तब वह क्रोध से भर गया, और लोगों को भेजकर ज्योतिषियों द्वारा ठीक–ठीक बताए गए समय के अनुसार बैतलहम और उसके आस–पास के स्थानों के सब लड़कों को जो दो वर्ष के या उससे छोटे थे, मरवा डाला। तब जो वचन यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हुआः "रामाह में एक करुण–नाद सुनाई दिया, रोना और बड़ा विलाप; राहेल अपने बालकों के लिये रो रही थी, और शांत होना न चाहती थी, क्योंकि वे अब नहीं रहे।"

तदोपरान्त उसकी सेवा के आरंभ में उस पर परीक्षा आई– मत्ती 4:1–11, "तब आत्मा यीशु को जंगल में ले गया ताकि इब्लीस से उस की परीक्षा हो। वह चालीस दिन, और चालीस रात, निराहार रहा, तब उसे भूख लगी। तब परखनेवाले ने पास आकर उस से कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो कह दे, कि ये पत्थर रोटियां बन जाएं।" यीशु ने उत्तर दियाः "लिखा है, 'मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा।'" तब इब्लीस उसे पवित्र नगर में ले गया और मन्दिर के कंगूरे पर खड़ा किया, और उससे कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आप को नीचे गिरा दे; क्योंकि लिखा हैः 'वह तेरे विषय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा, और वे तुझे हाथों–हाथ उठा लेंगे; कहीं ऐसा न हो कि तेरे पांवों में पत्थर से ठेस लगे।'" यीशु ने उससे कहा, "यह भी लिखा हैः 'तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर।'" फिर इब्लीस उसे एक बहुत ऊंचे पहाड़ पर ले गया और सारे जगत के राज्य और उसका वैभव दिखाकर उससे कहा, "यदि तू गिरकर मुझे प्रणाम करे, तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दूंगा।" तब यीशु ने उससे कहा, "हे शैतान दूर हो जा, क्योंकि लिखा हैः 'तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम

कर, और केवल उसी की उपासना कर।'" तब शैतान उसके पास से चला गया, और देखो, स्वर्गदूत आकर उसकी सेवा करने लगे।"

उसके जीवन और सेवा के मध्य वह दुष्टात्माएं निकाल रहा है– लूका 9:37–43, "दूसरे दिन जब वे पहाड़ से उतरे तो एक बड़ी भीड़ उस से आ मिली। और देखो, भीड़ में से एक मनुष्य ने चिल्ला कर कहा, "हे गुरु, मैं तुझ से विनती करता हूं कि मेरे पुत्र पर कृपादृष्टि कर; क्योंकि वह मेरा एकलौता है। और देख, एक दुष्टात्मा उसे पकड़ती है, और वह एकाएक चिल्ला उठता है; और वह उसे ऐसा मरोड़ता है कि वह मुंह में फेन भर लाता है; और उसे कुचलकर कठिनाई से छोड़ती है। मैं ने तेरे चेलों से विनती की कि उसे निकालें, परन्तु वे न निकाल सके।" यीशु न उत्तर दिया, "हे अविश्वासी और हठिले लोगो, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा, और तुम्हारी सहूंगा? अपने पुत्र को यहां ले आ।" वह आ ही रहा था कि दुष्टात्मा ने उसे पटककर मरोड़ा, परन्तु यीशु ने अशुद्ध आत्मा को डांटा और लकड़े को अच्छा करके उसके पिता को सौंप दिया। तब सब लोग परमेश्वर के महासामर्थ्य से चकित हुए।"

वह आत्मिक शक्तियों पर अपना अधिकार प्रकट करता है। फरीसियों ने उस पर शैतान की सहायता लेने का दोष लगाया– मत्ती 12:22–29, "तब लोग एक अंधे–गूंगे को जिसमें दुष्टात्मा थी, उसके पास लाए; और उसने उसे अच्छा किया, और वह बोलने और देखने लगा। इस पर सब लोग चकित होकर कहने लगे, "यह क्या दाऊद की सन्तान है!" परन्तु फरीसियों ने यह सुनकर कहा, "यह तो दुष्टात्माओं के सरदार बालज़बूल की सहायता के बिना दुष्टात्माओं को नहीं निकालता।" उसने उनके मन की बात जानकर उनसे कहा, "जिस किसी राज्य में फूट होती है, वह उजड़ जाता है; और कोई नगर या घराना जिसमें फूट होती है, बना न रहेगा। और यदि शैतान ही शैतान को निकाले, तो वह अपना ही विरोधी हो गया है; फिर उसका राज्य कैसे बना रहेगा? भला, यदि मैं शैतान की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो तुम्हारे वंश किसकी सहायता से निकालते हैं? इसलिये वे ही तुम्हारा न्याय करेंगे। पर यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुंचा है। या कैसे कोई मनुष्य किसी बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल लूट सकता है जब तक कि पहले वह उस बलवन्त को न बांध ले? तब वह उसका घर लूट लेगा।"

यह बलवन्त मनुष्य शैतान है परन्तु संपत्ति उसकी नहीं है। उसने तो मनुष्य को अन्धा करके बांध रखा है। क्रूस का मुख्य उद्देश्य ही बलवन्त मनुष्य शैतान को बान्धना है। प्रभु यीशु की सांसारिक सेवा प्रकट कर रही है कि शैतान बांधा जा रहा है। यीशु की प्रतिज्ञा है कि शैतान सदा के लिए नष्ट किया जाएगा।

शैतान और उसके स्वर्गदूतों के लिए अनन्त आग है– मत्ती 25:41, "तब वह बाईं ओर वालों से कहेगा, 'हे शापित लोगो, मेरे सामने से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है।"

शैतान बांधा गया और शैतान नष्ट होगा। यह उसके जीवन का अन्त का कार्य है जहां क्रूस अन्तिम शैतान दमन का काम है– यूहन्ना 12:31–32, "अब इस संसार का न्याय होता है, अब इस संसार का सरदार निकाल दिया जाएगा; और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो सब को अपने पास खीचूंगा।"

इस संसार का सरदार निकाला जाएगा। क्रूस अन्तिम शैतान बन्धन है और पुनरुत्थान अन्तिम विजय है– 1 कुरिन्थियों 15:3–8, "इसी कारण मैं ने सब से पहले तुम्हें वही बात पहुंचा दी, जो मुझे पहुंची थी कि पवित्रशास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया, और गाड़ा गया, और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा, और कैफा को तब बारहों को दिखाई दिया। फिर पांच सौ से अधिक भाइयों को एक साथ दिखाई दिया, जिनमें से बहुतेरे अब तक जीवित हैं पर कुछ सो गए। फिर वह याकूब को दिखाई दिया तब सब प्रेरितों को दिखाई दिया। सब के बाद मुझ को भी दिखाई दिया, जो मानो अधूरे दिनों का जन्मा हूं।"

1 कुरिन्थियों 15:54–57, "और जब यह नाशवान अविनाश को पहिन लेगा, और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा, तब वह वचन जो लिखा है पूरा हो जाएगाः "जय ने मृत्यु को निगल लिया। हे मृत्यु, तेरी जय कहां रही? हे मृत्यु, तेरा डंक कहां रहा?" मृत्यु का डंक पाप है; और पाप का बल व्यवस्था है। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है।"

अपनी सेवा के अन्त में जब वह स्वर्ग पर चढ़ रहा था तब उसने कहा– मत्ती 28:18, "यीशु ने उनके पास आकर कहा, "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।"

यह दानिय्येल की भविष्यद्वाणी की पूर्ति है– दानिय्येल 7:13–14, "मैं ने रात में स्वप्न में देखा, और देखो, मनुष्य के सन्तान–सा कोई आकाश के बादलों समेत आ रहा था, और वह उस अति प्राचीन के पास पहुंचा, और उसको वे उसके समीप लाए। तब उसको ऐसी प्रभुता, महिमा और राज्य दिया गया, कि देश–देश और

जाति–जाति के लोग और भिन्न–भिन्न भाषा बालनेवाले सब उसके अधीन हों; उसकी प्रभुता सदा तक अटल, और उसका राज्य अविनाशी ठहरा।"

द्विपक्षीय युद्ध

अतः स्पष्ट है कि यीशु अपने संपूर्ण जीवन और अपनी सेवा में अपनी प्रभुता प्रकट कर रहा था। परन्तु मैं जो आपको समझाना चाहता हूं वह यह है कि आत्मिक युद्ध में यीशु का युद्ध द्विपक्षीय था– नैतिक अनाचार और प्राकृतिक विपदा।

इन दोनों में मैं अन्तर स्पष्ट कर रहा हूं। नैतिक अनाचार में पाप आता है– दुष्टता, असमता, अपराध, और पाप अर्थात जो हम मानते हैं कि बुरा है परन्तु उसे करते भी हैं। हम संपूर्ण धर्मशास्त्र और सुसमाचारों में भी देखते हैं कि नैतिक अनाचार में कष्ट विहित होते हैं। अब आवश्यक नहीं कि हम करें परन्तु हम पर आनेवाली बुराई भी नैतिक अनाचार है जैसे प्राकृतिक आपदा एवं रोग आदि। अतः प्राकृतिक अनाचार पाप नहीं है। इसमें निःसन्देह कष्ट सहना पड़ता है।

परन्तु इनमे संबन्ध तो है ही। नैतिक अनाचार अन्ततः प्राकृतिक आपदा का कारण है। इसका मूल आरंभ ही से है। उत्पत्ति 3 में पाप के आगमन के कारण विनाशकारी घटनाएं घटी हैं जैसे प्राकृतिक आपदा, भूकम्प, बवण्डर आदि। अब रोग का अर्थ यह नहीं कि हमने पाप किया है परन्तु अन्ततः नैतिक अनाचार प्राकृतिक आपदाओं का कारण है। अतः यहां दो प्रकार की बुराइयां हैं। अब प्रश्न यह है कि शैतान इन दोनों से कैसे संबन्धित है?

शैतान झूठा है और नैतिक अनाचार को प्रेरित करता है। वह हमें पाप करने के लिए प्रेरित करता है। वह हत्यारा भी है जो प्राकृतिक विनाश लाता है। वह कष्ट देता है। मैं चाहता हूं कि हम कुछ समय विचार करके देखें कि प्रभु यीशु ने नैतिक एवं प्राकृतिक बुराइयों का सामना किया।

यीशु ने नैतिक और प्राकृतिक बुराइयों का सामना अलग अलग विधि से किया। उसने नैतिक बुराई का सामना कैसे किया? यीशु ने नैतिक बुराई के विरुद्ध सत्य की घोषणा की। जब शैतान ने जंगल में उसकी परीक्षा ली तो उसने धर्मशास्त्र का संदर्भ दिया। उसने पाप की परीक्षा को सत्य की ढाल से रोका। उसका पहला उपदेश था– मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है– मत्ती 4:12–17, "जब उसने यह सुना

कि यूहन्ना बन्दी बना लिया गया है, तो वह गलील को चला गया। और वह नासरत को छोड़कर कफरनहूम में, जो झील के किनारे जबूलून और नप्ताली के देश में है, जाकर रहने लगा; ताकि जो यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा होः "जबूलून और नप्ताली के देश, झील के मार्ग से यरदन के पार, अन्यजातियों का गलील– जो लोग अंधकार में बैठे थे, उन्होंने बड़ी ज्योति देखी; और जो मृत्यु के देश और छाया में बैठे थे, उन पर ज्योति चमकी।" उस समय से यीशु ने प्रचार करना और यह कहना आरम्भ किया, "मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है।"

उसने मनुष्यों के पाप को प्रकट किया, विशेष करके धर्मगुरुओं के और मन फिराव की पुकार की। क्या प्रभु यीशु ने धर्मगुरुओं में से दुष्टात्मा निकाला था? क्या उसने कहा, "घमण्ड का दुष्टात्मा बाहर हो, पाखण्ड का दुष्टात्मा बाहर हो। पैसों का दुष्टात्मा बाहर हो। आत्मनिर्भरता का दुष्टात्मा बाहर हो।" नहीं, उसने केवल उनके पाप का सामना सत्य से करवाकर मन फिराव की पुकार की।

उसने प्राकृतिक आपदा का सामना करके अपना सामर्थ्य भी प्रकट किया। उसने कष्टों और रोगों के विरुद्ध भी सत्य को रखा परन्तु परमेश्वर के सामर्थ्य को भी काम में लिया। मरकुस 3:10–12 में प्रभु यीशु प्राकृतिक बुराई को दूर कर रहा है, न कि नैतिक बुराई को, "क्योंकि उसने बहुतों को चंगा किया था, इसलिये जितने लोगे रोग से ग्रसित थे, उसे छूने के लिये उस पर गिरे पड़ते थे। अशुद्ध आत्मांए भी, जब उसे देखती थीं, तो उसके आगे गिर पड़ती थीं, और चिल्लाकर कहती थीं कि तू परमेश्वर का पुत्र है; और उसने उन्हें बहुत चिताया कि मुझे प्रगट न करना।"

मत्ती 4:23–25, "यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन के आराधनालयों में उपदेश करता, और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा। और सारे सीरिया देश में उसका यश फैल गया; और लोग सब बीमारों को, जो नाना प्रकार की बीमारियों और दुःखों में जकड़े हुए थे, और जिन में दुष्टात्माएं थीं, और मिर्गीवालों और लकवे के रोगियों को, उसके पास लाए और उस ने उन्हें चंगा किया। गलील और दिकापुलिस, यरूशलेम, यहूदिया और यरदन नदी के पार से भीड़ की भीड़ उसके पीछे हो ली।"

यहां स्पष्ट है कि वह दुष्टात्माओ से पीढ़ित जनों को रोगी मानता है।

लूका 6:17–19, "तब वह उनके साथ उतरकर चौरस जगह में खड़ा हुआ, और उसके चेलों की बड़ी भीड़, और सारे यहूदिया और यरूशलेम और सूर और सैदा के समुद्र के किनारे से बहुतेरे लोग, जो उसकी सुनने और अपनी बीमारियों से चंगा होने के लिये उसके पास आए थे, वहां थे। और अशुद्ध आत्माओं के सताए हुए लोग भी अच्छे किए जाते थे। सब उसे छूना चाहते थे, क्योंकि उसमें से सामर्थ्य निकलकर सब को चंगा करती थी।"

लूका अध्याय 7 में रोग और दुष्टात्मा का संबन्ध स्पष्ट है– लूका 7:21, "उसी घड़ी उसने बहुतों को बीमारियों और पीड़ाओं, और दुष्टात्माओं से छुड़ाया; और बहुत से अन्धों को आंखे दी।"

लूका 13:10–17, "सब्त के दिन वह एक आराधनालय में उपदेश कर रहा था। वहां एक स्त्री थी जिसे अठारह वर्ष से एक दुर्बल करनेवाली दुष्टात्मा लगी थी, और वह कुबड़ी हो गई थी और किसी रीति से सीधी नहीं हो सकती थी। यीशु ने उसे देखकर बुलाया और कहा, "हे नारी, तू अपनी दुर्बलता से छूट गई।" तब उसने उस पर हाथ रखे, और वह तुरन्त सीधी हो गई और परमेश्वर की बड़ाई करने लगी। इसलिये कि यीशु ने सब्त के दिन उसे अच्छा किया था, आराधनालय का सरदार रिसियाकर लोगों से कहने लगा, "छः दिन हैं जिन में काम करना चाहिए, अतः उन ही दिनों में आकर चंगे हो, परन्तु सब्त के दिन में नहीं।" यह सुन कर प्रभु ने उत्तर दिया, "हे कपटियो, क्या सब्त के दिन तुम में से हर एक अपने बैल या गदहे को थान से खोलकर पानी पिलाने नहीं ले जाता? तो क्या उचित न था कि यह स्त्री जो अब्राहम की बेटी है जिसे शैतान ने अठारह वर्ष से बांध रखा था, सब्त के दिन इस बन्धन से छुड़ाई जाती?" जब उसने ये बातें कहीं, तो उसके सब विरोधी लज्जित हो गए, और सारी भीड़ उन महिमा के कामों से जो वह करता था, आनन्दित हुई।"

यहां ध्यान दीजिए यीशु नैतिक बुराई के निवारण हेतु दुष्टात्मा नहीं निकालता था जो पाप से संबन्धित है। वह दुष्टात्मा निकालता था क्योंकि वह प्राकृतिक बुराई थी जिससे कष्ट उत्पन्न होता था। यीशु ने कष्टिन जनों से दुष्टात्मा निकाली कि वे शान्ति पाएं न कि पापियों से जिन्हें मन फिराव की आवश्यकता थी।

यीशु ने कभी कभी दोनों ही परिस्थितियों को एक साथ संभाला था– मरकुस 2 या यूहन्ना 5 में यीशु ने उन्हें रोगमुक्त किया और उनके पाप क्षमा कर के अपना अपना अधिकार प्रकट किया परन्तु मरकुस 5 में प्रभु यीशु दुष्टात्माग्रस्त मनुष्य को मुक्ति दिलाता है। धर्मशास्त्र में स्पष्ट नहीं किया गया है कि यह दुष्टात्मा पाप

की थी। उसका व्यवहार असामान्य था और वह पापी था परन्तु यहां मुख्य विषय उसके कष्ट थे जो दुष्टात्मा के कारण उस पर आए थे। अतः प्रभु यीशु मुक्ति दिलाता है।

अतः इस गद्यांश में यीशु नैतिक बुराई और प्राकृतिक बुराई को भिन्न–भिन्न रीति से दूर करता है। नैतिक बुराई के लिए वह कहता है, "परमेश्वर का सत्य यह है, मन फिराओ।" यह प्रभु यीशु की सेवा में नैतिक बुराई के साथ आत्मिक युद्ध है कि वह दुष्टात्मा निकाल रहा है। हम उसे पाप की दुष्टात्मा निकालते नहीं देखते हैं। वह कष्टदायक दुष्टात्मा निकालता है, इसक स्मरण रखें क्योंकि यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

कलीसिया और आत्मिक युद्ध

क्या हम यीशु की नाईं आत्मिक युद्ध करते हैं?

अब आता है कलीसिया और आत्मिक युद्ध। पुराने नियम और प्रभु यीशु और कलीसिया के आत्मिक युद्ध में क्या अन्तर है और क्या समानताएं हैं? यहां हमें एक मुख्य प्रश्न पूछना है, "क्या हम प्रभु यीशु की नाईं आत्मिक युद्ध करते हैं?" नया नियम इन सब बातों में वही शिक्षा देता है कि हमारे सामने वही विषय है जिनका सामना प्रभु यीशु कर चुका था। तथापि हम उनका सामना करने में सर्वथा भिन्न रूप से करते हैं।

मैं चाहता हूं कि आप सोचें, कि प्रभु यीशु जिन विषयों का सामना करता था उनका सामना हम सर्वथा भिन्न रूप से कैसे कर सकते हैं। उदाहरण कर चुकाना – मत्ती 17:24–27, "जब वे कफरनहूम पहुंचे, तो मन्दिर का कर लेनेवालों ने पतरस के पास आकर पूछा, "क्या तुम्हारा गुरु मन्दिर का कर नहीं देता?" उसने कहा, "हां, देता तो है।" जब वह घर में आया, तो यीशु ने उसके पूछने से पहले ही उससे कहा, "हे शमौन, तू क्या सोचता है? पृथ्वी के राजा महसूल या कर किन से लेते हैं? अपने पुत्रों से या परायों से?" पतरस ने उससे कहा, "परायों से।" यीशु ने उस से कहा, "तो पुत्र बच गए। तौभी इसलिये कि हम उन्हें ठोकर न खिलाएं, तू झील के किनारे जाकर बंसी डाल, और जो मछली पहले निकले, उसे ले; उसका मुंह खोलने पर तुझे एक सिक्का मिलेगा, उसी को लेकर मेरे और अपने बदले उन्हें दे देना।"

प्रभु यीशु ने तो मछली पकड़ कर उसके पेट से पैसा निकाल कर कर चुकाया था। क्या हम ऐसा कर सकते हैं? नहीं, धर्मशास्त्र कहता है कि हमें परिश्रम करके पैसा कमाना है और कर चुकाना है उदाहरण के लिए देखें मत्ती 22:16–22, "अतः उन्होंने अपने चेलों को हेरोदियों के साथ उसके पास यह कहने को भेजा,

"हे गुरु, हम जानते हैं कि तू सच्चा है, और परमेश्वर का मार्ग सच्चाई से सिखाता है, और किसी की परवाह नहीं करता, क्योंकि तू मनुष्यों का मुंह देखकर बातें नहीं करता। इसलिये हमें बता तू क्या सोचता है? कैसर को कर देना उचित है कि नहीं।" यीशु ने उनकी दुष्टता जानकर कहा, "हे कपटियो, मुझे क्यों परखते हो? कर का सिक्का मुझे दिखाओ।" तब वे उसके पास एक दीनार ले आए। उसने उनसे पूछा, "यह छाप और नाम किसका है?" उन्होंने उससे कहा, "कैसर का।" तब उसने उनसे कहा "जो कैसर का है, वह कैसर को; और जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर को दो।" यह सुनकर उन्होंने अचम्भा किया, और उसे छोड़कर चले गए।"

अब मछली पकड़ने पर ध्यान दें:

यूहन्ना 21:1–6, "इन बातों के बाद यीशु ने अपने आप को तिबिरियास झील के किनारे चेलों पर प्रगट किया, और इस रीति से प्रगट किया: शमौन पतरस, और थोमा जो दिदुमुस कहलाता है, और गलील के काना नगर का नतनएल और जब्दी के पुत्र, और उसके चेलों में से दो और जन इकट्ठे थे। शमौन पतरस ने उनसे कहा, "मैं मछली पकड़ने जा रहा हूं।" उन्होंने उससे कहा, "हम भी तेरे साथ चलते हैं।" अतः वे निकलकर नाव पर चढ़े, परन्तु उस रात कुछ न पकड़ा। भोर होते ही यीशु किनारे पर खड़ा हुआ; तौभी चेलों ने न पहचाना कि यह यीशु है। तब यीशु ने उन से कहा, "हे बालको, क्या तुम्हारे पास कुछ मछलियां है?" उन्होंने उत्तर दिया कि "नहीं।" उसने उनसे कहा, "नाव की दाहिनी ओर जाल डालो तो पाओगे।" अतः उन्होंने जाल डाला, और अब मछलियों की बहुतायत के कारण उसे खींच न सके।"

परन्तु हमारे साथ तो ऐसा नहीं है। हमें मछली की अपेक्षा अन्य विधि द्वारा भोजन पाना है। प्रभु यीशु पानी पर चलकर विश्वास प्रकट करता है– मत्ती 14:24–33, "उस समय नाव झील के बीच लहरों से डगमगा रही थी, क्योंकि हवा सामने की थी। और यीशु रात के चौथे पहर झील पर चलते हुए उनके पास आया। चेले उसको झील पर चलते हुए देखकर घबरा गए। और कहने लगे, "यह भूत है!" और डर के मारे चिल्लाने लगे। तब यीशु ने तुरन्त उनसे बातें कीं और कहा, "ढाढ़स बांधो! मैं हूं, डरो मत!" पतरस ने उसको उत्तर दिया, "हे प्रभु, यदि तू ही है, तो मुझे अपने पास पानी पर चलकर आने की आज्ञा दे।" उसने कहा, "आ!" तब पतरस नाव पर से उतरकर यीशु के पास जाने को पानी पर चलने लगा। पर हवा को देखकर डर गया, और जब डूबने लगा तो चिल्लाकर कहा, "हे प्रभु, मुझ बचा।" यीशु ने तुरन्त हाथ बढ़ाकर उसे थाम लिया और उससे कहा, "हे अल्पविश्वासी, तू ने क्यों सन्देह किया?" जब वे नाव पर चढ़ गए, तो हवा थम गई। इस पर उन्होंने जो नाव पर थे, उसे दण्डवत् करके कहा, "सचमुच, तू परमेश्वर का पुत्र है।"

क्या हम भी पानी पर चलकर अपना विश्वास प्रकट करें? नहीं हमें कष्टों के मध्य विश्वास से चलना है– परमेश्वर में विश्वास रखकर प्रभु यीशु पर ध्यान केन्द्रित करना है।

यीशु ने 5,000 को खाना खिलाया था।

यूहन्ना 6:10–13, "यीशु ने कहा, "लोगों को बैठा दो।" उस जगह बहुत घास थीः तब लोग जिनमें पुरुषों की संख्या लगभग पांच हजार के थे, बैठ गए। तब यीशु ने रोटियां लीं, और धन्यवाद करके बैठनेवालों को बांट दीं; और वैसे ही मछलियों में से जितनी वे चाहते थे बांट दिया। जब वे खाकर तृप्त हो गए तो उसने अपने चेलों से कहा, "बचे हुए टुकड़े बटोर लो कि कुछ फेंका न जाए। अतः उन्होंने बटोरा, और जौ की पांच रोटियों के टुकड़े जो खानेवालों से बच रहे थे, बारह टोकरियां भरीं।"

प्रभु यीशु ने इस चमत्कार द्वारा स्वयं को परमेश्वर दर्शाया। हम तो प्रभु यीशु के समान किसी को चमत्कारी रूप से भोजन नहीं करा सकते परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि हम भूखों को भोजन न कराएं। हम भूखों को भोजन करवाने के लिए परिश्रम करके परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं। हम चमत्कार की प्रार्थना क्यों नहीं कर सकते? परमेश्वर इफिसियों 4 और 2 कुरिन्थियों 8 और 9 में कहता है कि हम आवश्यकताग्रस्त मनुष्यों के लिए अपने संसाधनों का त्याग करें। अतः भूखों को खाना खिलाने के लिए परिश्रम करें और प्रार्थना करें।

अपने वचनों पर ध्यान दें– यीशु की बातें सुनकर मनुष्यों की प्रतिक्रिया पर ध्यान दें।

मत्ती 5:21–22, "तुम सुन चुके हो, कि पूर्वकाल के लोगों से कहा गया था कि 'हत्या न करना,' और 'जो कोई हत्या करेगा वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा।' परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि जो कोई अपने भाई पर क्रोध करेगा, वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा, और जो कोई अपने भाई को निकम्मा कहेगा वह महासभा में दण्ड के योग्य होगा; और जो कोई कहे 'अरे मूर्ख' वह नरक की आग के दण्ड के योग्य होगा।"

हमें स्मरण रखना है कि प्रभु यीशु में अधिकार था। उसके वचन परमेश्वर के वचन थे परन्तु हमारे साथ ऐसा नहीं है। हमारे वचन बाइबल के वचन हैं। बाइबल हमारा अधिकार है।

पापों की क्षमा पर विचारें

मरकुस 2:8–12, "यीशु ने तुरन्त अपनी आत्मा में जान लिया कि वे अपने–अपने मन में ऐसा विचार कर रहे हैं, और उनसे कहा, "तुम अपने–अपने मन में यह विचार क्यों कर रहे हो? सहज क्या है? क्या लकवे के रोगी से यह कहना कि तेरे पाप क्षमा हुए, या यह कहना कि उठ अपनी खाट उठा कर चल फिर? परन्तु जिस से तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का भी अधिकार है।" उसने उस लकवे रोगी से कहा, "मैं तुझ से कहता हूं, उठ, अपनी खाट उठाकर अपने घर चला जा।" वह उठा और तुरन्त खाट उठाकर और सब के सामने से निकलकर चला गया; इस पर सब चकित हुए, और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे, "हम ने ऐसा कभी नहीं देखा।"

यीशु के पास पाप क्षमा का अधिकार था। हमारे पास यह अधिकार नहीं है। हम तो पापों की क्षमा के लिए प्रभु यीशु का प्रचार करते हैं। हमारे सामने भी मनुष्यों के पापों की क्षमा का विषय है परन्तु हमारी विधि सर्वथा भिन्न है।

मृतको को जिलाना– यूहन्ना 11:41–44, "तब उन्होंने उस पत्थर को हटाया। यीशु ने आंखें उठाकर कहा, "हे पिता, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं कि तू ने मेरी सुन ली है। मै जानता था कि तू सदा मेरी सुनता है, परन्तु जो भीड़ आस पास खड़ी है, उनके कारण मैं ने यह कहा, जिससे कि वे विश्वास करें कि तू ने मुझे भेजा है।" यह कहकर उसने बड़े शब्द से पुकारा, "हे लाज़र, निकल आ!" जो मर गया था वह कफन से हाथ पांव बंधे हुए निकल आया, और उसका मुंह अंगोछे से लिपटा हुआ था। यीशु ने उनसे कहा, "उसे खोल दो और जाने दो।"

यीशु ने बस आज्ञा दी, "लाज़र बाहर आ।" यह उसकी आज्ञा और सुसमाचार का नियन्त्रण था। हम मृतक को आज्ञा देकर जीवित नहीं कर सकते परन्तु निश्चय ही सुसमाचार का निमन्त्रण दे सकते हैं। हम उन्हें अनन्त जीवन का मार्ग दिखाते हैं, उन्हें उठकर चलने के लिए नहीं कहते हैं।

आंधी थमने पर विचारें– मरकुस 4 –मौसम यीशु की आज्ञा मानता है– मरकुस 4:35–41, "उसी दिन जब सांझ हुई, तो उसने चेलों से कहा, "आओ, हम पार चलें।" और वे भीड़ को छोड़कर जैसा वह था, वैसा ही उसे नाव पर साथ ले चले; और उसके साथ और भी नावें थीं। तब बड़ी आंधी आई, और लहरें नाव पर यहां तक लगीं कि वह अब पानी से भरी जाती थी। पर वह आप पिछले भाग में गद्दी पर सो रहा था। तब

उन्होंने उसे जगाकर उससे कहा, "हे गुरु, क्या तुझे चिन्ता नहीं, कि हम नष्ट हुए जाते हैं?" तब उसने उठकर आंधी को डांटा, और पानी से कहा, "शान्त रह, थम जा!" और आंधी थम गई और बड़ा चैन हो गया; और उनसे कहा, "तुम क्यों डरते हो? क्या तुम्हें अब तक विश्वास नहीं?" और वे बहुत ही डर गए और आपस में बोले, "यह कौन है कि आंधी और पानी भी उसकी आज्ञा मानते हैं?"

हम तो यीशु की नाईं आज्ञा नहीं दे सकते परन्तु हां, परमेश्वर से प्रार्थना कर सकते हैं और परमेश्वर उत्तर देता है। रोगमुक्ति पर विचारें– प्रभु यीशु के पास रोगमुक्ति का अधिकार था। वे तत्काल ही रोगमुक्त हो जाते थे–मत्ती 4:23–25, "यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन के आराधनालयों में उपदेश करता, और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा। और सारे सीरिया देश में उसका यश फैल गया; और लोग सब बीमारों को, जो नाना प्रकार की बीमारियों और दुःखों में जकड़े हुए थे, और जिन में दुष्टात्माएं थीं, और मिर्गीवालों और लकवे के रोगियों को, उसके पास लाए और उस ने उन्हें चंगा किया। गलील और दिकापुलिस, यरूशलेम, यहूदिया और यरदन नदी के पार से भीड़ की भीड़ उसके पीछे हो ली।"

हम किसी की रोगमुक्ति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं। याकूब 5 में लिखा है कि प्राचीनों को बुलाकर प्रार्थना करवाएं। ये विभिन्न उदाहरण हैं।

अब आत्मिक युद्ध के बारे में विचार करें। मरकुस 5:6–13, "वह यीशु को दूर ही से देखकर दौड़ा, उसे प्रणाम किया, और ऊंचे शब्द से चिल्लाकर कहा, "हे यीशु, परमप्रधान परमेश्वर के पुत्र, मुझे तुझ से क्या काम? मैं तुझे परमेश्वर की शपथ देता हूं कि मुझे पीड़ा न दे।" क्योंकि उसने उससे कहा था, "हे अशुद्ध आत्मा, इस मनुष्य में से निकल आ!" उसने उससे पूछा, "तेरा क्या नाम है?" उसने उससे कहा, "मेरा नाम सेना है; क्योंकि हम बहुत हैं।" और उसने उससे बहुत विनती की, "हमें इस देश से बाहर न भेज।" वहां पहाड़ पर सूअरों का एक बड़ा झुण्ड चर रहा था। उन्होंने उससे विनती करके कहा, "हमें उन सूअरों में भेज दे कि हम उनके भीतर जाएं।" अतः उसने उन्हें आज्ञा दी और अशुद्ध आत्मा निकलकर सूअरों के भीतर पैठ गईं और झुण्ड, जो कोई दो हजार का था, कड़ाडे पर से झपटकर झील में जा पड़ा और डूब मरा।"

मरकुस 5 में यहां प्रभु यीशु दुष्टात्माएं निकालता है परन्तु हमें दुष्टात्माएं निकालने की आज्ञा नहीं दी गई है। आप लूका 10 का उदाहरण देंगे परन्तु वह परिस्थिति और समय भिन्न था। उनके साथ प्रभु यीशु था। वहां परमेश्वर का राज्य आ गया था। सुसमाचारों में दुष्टात्माएं निकालने की आज्ञा नहीं है। मत्ती, मरकुस,

लूका, यूहन्ना और प्रेरितों के काम की पुस्तक के बाद तो नये नियम में दुष्टात्मा निकालने की घटना कहीं नहीं है। यीशु ने और प्रेरितों ने दुष्टात्माएं निकाली थीं परन्तु उसके बाद ऐसा फिर कहीं नहीं हुआ। प्रेरितों के काम से रोमियों तक दुष्टात्माएं निकालने का काम कभी नहीं हुआ था।

मैं जो कहना चाहता हूं वह यह है कि कलीसिया में आत्मिक युद्ध दुष्टात्माएं निकालना नहीं है परन्तु विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़ना और मन फिराना तथा अन्यों को मन फिराव के लिए पुकारना है। यह आत्मिक युद्ध है। यही विचार पुराने नियम में है और यही सुसमाचारों में प्रभु यीशु द्वारा नैतिक बुराई से संघर्ष करना है और कलीसिया तथा आत्मिक युद्ध में भी यही विचार है। हमें मनुष्यों में से दुष्टात्माएं निकालने की आज्ञा नहीं दी गई है।

प्रकाशितवाक्य अध्याय 2 और 3 में सात कलीसियाओं का उल्लेख है जो आत्मिक युद्ध में थीं। इफिसुस, स्मुरना, पिरगमुन और लौदीकिया की कलीसियाएं अन्यजाति मूर्तिपूजा के मध्य थीं। वहां हर प्रकार की दुष्टात्माएं थीं। यह बड़ी ही रोचक बात है कि जब प्रभु यीशु उनसे बात करता है तो उसमें आज के समान आत्मिक युद्ध फंसे विश्वासियों की सी चर्चा कहीं नहीं है।

हम कदम कदम पर यीशु के नाम में शैतान को झिड़कते हैं। दुष्टात्माएं निकालने की आज अनेक विधियां हैं। एक पुस्तक है, "डिलीवरेन्स बुक।"

मुक्ति में हम आत्माओं और हमारे मन को विकृत करनेवाली तथा मन को धोखा देनेवाली लालसाओं से मुक्ति पाते हैं। आत्मा क्या है? क्रोध एक आत्मा है। उत्तेजना और आत्मसहानुभूति आत्माएं हैं, बैर, ईर्ष्या, रोग, चिन्ता, छल, अहंकार, भय, विद्रोह, घमण्ड, अभिमान, समलैंगिकता, शिकायत करना, झूठ आदि सब आत्माओं के नाम हैं। यदि आपने अपने जीवन में कभी ऐसी लालसा या आत्मा की अनुभूति प्राप्त की है तो वह आपमें है जब तक कि आप उससे मुक्त न हों।

इन पुस्तक के लेखकों के अनुसार आपको मुक्ति पाने के लिए कुछ आत्माओं को बांधना होगा या निकालना होगा। वे कहते हैं कि हमें यह प्रार्थना करना चाहिए, "मैं तुझ, _____ दुष्ट आत्मा को प्रभु यीशु के नाम में और लहू में डांटता हूं और आज्ञा देता हूं कि तू मुझे इसी समय पूरी तरह से छोड़ दे। प्रभु यीशु धन्यवाद!" कुछ लोगों का कहना है कि आप को आत्मा से सीधी बात करके खांसना है और फूंककर उसे निकाल देना है। यह क्या है? खांसना आत्मा को मुक्त करने के लिए आवश्यक है। आप आत्मा के

निकलने तक खांसें। यदि आत्मा उग्रता प्रकट करे तो उसे आज्ञा दें। आत्मा को इस प्रार्थना के शब्द न तो बोलने दें और न ही बदलने दें। यदि शब्दों में बदलाव आया तो आत्मा आज्ञा नहीं मानेगी। वह जानती है। यह प्रचलन में है परन्तु इसमें परिवर्तन भी लाए जाते हैं। कुछ अधिक विस्तृत हैं।

हम आत्मिक युद्ध कैसे करते हैं?

प्रभु यीशु भूतसिद्धि से फिरी हुई कलीसियाओ से क्या कहता है? इफिसुस की कलीसिया जो मूर्तिपूजा और अनैतिकता से घिरी हुई थी वह डायना का मन्दिर था और असंख्य किन्नर तथा वैश्याएं थीं। वे शराब पीकर, संगीत के साथ उन्मादी होते थे और वहां व्यभिचार होता था। प्रभु यीशु उनसे यह नहीं कहता है कि वे व्यभिचार और मूर्तिपूजा की आत्माओं को निकालें। मन्दिर के चारों ओर प्रार्थना जुलूस निकालें और दुष्टात्माओं को बांधें। नहीं वह कहता है, प्रकाशितवाक्य 2:5, "इसलिये स्मरण कर कि तू कहां से गिरा है, और मन फिरा और पहले के समान काम कर। यदि तू मन न फिराएगा, तो मैं तेरे पास आकर तेरी दीवट को उसके स्थान से हटा दूंगा।"

आत्मिक युद्ध मन में लड़ा जाता है।

स्मुरना की कलीसिया– सताव में पड़ी कलीसिया। शैतान उन पर सताव ला रहा था। यीशु ने उनसे यह नहीं कहा कि शैतान और उसकी शक्तियों को बांधो। परमेश्वर अपने उद्देश्य के निमित्त उन पर सताव आने दे रहा था। वह सताव पर भी प्रभुता संपन्न था। प्रभु उनसे कहता है, परमेश्वर में विश्वास रखो और धीरज का यत्न करो। मरने तक विश्वासी रहो तो मैं तुम्हें जीवन दूंगा। यह आत्मिक युद्ध है।

पिरगामुन की कलीसिया– शैतान के सिंहासन के मध्य। वहां ज़ीअस का मन्दिर था। ज़ीअस रोगहरण का देवता था। रोगी वहां लेट जाते थे और उन पर सांप रेंगते थे कि उनका रोग दूर हो। परमेश्वर उनसे नहीं कहता कि वे शैतान को बांधें। वह कहता है, विचारों और कर्मों में पवित्र ठहरो। आप इस प्रकार बैरी से युद्ध करते हैं।

थूआतीरा की कलीसिया– झूठी शिक्षा से ग्रस्त। उनकी शिक्षिका, ईजेबेल थी जो उन्हें अनैतिकता और मूर्तिपूजा की शिक्षा देती थी। यीशु ने उनसे नहीं कहा कि ईजेबेल को बांधों और उसमें से दुष्टात्मा निकालो। उसने कहा, पवित्र सत्य सुनो और पवित्र जीवन जीओ। यह आत्मिक युद्ध है।

प्रकाशितवाक्य 3 में सरदीस की कलीसिया है जो मृतक कलीसिया थी उनकी आत्मिकता समाप्त हो गई थी। यीशु कहता है, पाप से मन फिराओ और मसीह के पास आओ। इस प्रकार आप अन्धकार से ज्योति में आते हैं।

फिलदिलफिया– विरोध का सामना करती थी। वहां के अविश्वासी यहूदी सुसमाचार का विरोध करते थे। विश्वासियों में विश्वास से हटने की परीक्षा थी। यीशु कहता है, मेरे वचन पर दृढ़ रहो और मेरे नाम की घोषणा करो। यह आत्मिक युद्ध है कि सुसमाचार का प्रचार करें न कि आत्माओं को बांधो। उनका आत्मिक युद्ध यही था।

लौदीकिया– गुनगुनी कलीसिया। उनके पास संसार का सब कुछ था। यीशु ने कहा, तुम कंगाल और नंगे हो। यीशु ने उनसे कहा मसीह के धन की खोज करो। अपना जीवन मसीह में रखो। मसीह पर आंखें लगाए रखो।

ये सातों कलीसियाएं आत्मिक युद्ध में थीं। यीशु ने कभी नहीं कहा कि वे आत्माओं के चक्कर में पड़ें। यीशु ने उनसे कहा, मन फिराओ और मसीह के पास आ जाओ। पवित्र बनो। अपना पहला प्रेम रखो और संपूर्ण नगर में उसका प्रचार करो। यह नये नियम का आत्मिक युद्ध है।

अतः नये नियम का आत्मिक युद्ध आत्माओं को निकालना या बांधना नहीं है। वह प्रभु यीशु का लगातार अनुसरण करना है। पाप से विमुख होकर पृथ्वी की छोर तक सुसमाचार प्रचार करना है। यही आत्मिक युद्ध है।

नया नियम हमें आत्मिक युद्ध नीति में क्या सिखाता है? 1) दृढ़ रहो–सुरक्षा। इफिसियों 6:10, "बलवन्त बनो। परमेश्वर के सारे हथियार बांध लो..." कि बलवन्त हो जाओ। पद 13, "कि तुम बुरे दिन में सामना कर सको और सब कुछ पूरा करके स्थिर रह सको।" वह यहां बल देता है कि "खड़े रहो" "स्थिर रहो।"

शैतान का सामना करना और स्थिर रहना आत्मिक युद्ध है। परीक्षा और शैतानी वार में स्थिर रहना। 1 पतरस 5:8–11, "सचेत हो, और जागते रहो; क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाए। विश्वास में दृढ़ होकर, और यह जानकर उसका सामना करो

कि तुम्हारे भाई जो संसार में हैं ऐसे ही दुःख सह रहे हैं। अब परमेश्वर जो सारे अनुग्रह का दाता है, जिसने तुम्हें मसीह में अपनी अनन्त महिमा के लिये बुलाया, तुम्हारे थोड़ी देर तक दुःख उठाने के बाद आप ही तुम्हें सिद्ध और स्थिर और बलवन्त करेगा। उसी का साम्राज्य युगानुयुग रहे। आमीन।"

आपको शैतान का सामना करना है, स्थिर रहना है, दृढ़ रहना है। इससे अधिक बलवन्त विजय दूसरी नहीं। याकूब 4:7–10, "इसलिये परमेश्वर के अधीन हो जाओ; और शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा। परमेश्वर के निकट आओ तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा। हे पापियो, अपने हाथ शुद्ध करो; और हे दुचित्ते लोगों अपने हृदय को पवित्र करो। दुःखी हो, और शोक करो, और रोओ। तुम्हारी हंसी शोक में और तुम्हारा आनन्द उदासी में बदल जाए। प्रभु के सामने दीन बनो तो वह तुम्हें शिरोमणि बनाएगा।"

शैतान का सामना करने से वह दूर भागता है। अतः स्थिर रहो, दृढ़ रहो।

2) आगे बढ़ो– आक्रामक! पृथ्वी की छोर तक सुसमाचार सुनाओ– इफिसियों 6:19, "और मेरे लिये भी कि मुझे बोलने के समय ऐसा प्रबल वचन दिया जाए कि मैं साहस से सुसमाचार का भेद बता सकूं।"

बाइबल में शैतान के तीन आक्रामक क्षेत्र हैं– संसार, शरीर और शैतान। तीनों ही इफिसियों 2 में हैं– इफिसियों 2:1–3, "उसने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे जिनमें तुम पहले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न माननेवालों में कार्य करता है। इनमें हम भी सब के सब पहले अपने शरीर की लालसाओं में दिन बिताते थे, और शरीर और मन की इच्छाएं पूरी करते थे, और अन्य लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान थे।"

याकूब 3:15 में भी ये तीनों हैं– "यह ज्ञान वह नहीं जो ऊपर से उतरता है वरन् सांसारिक, और शारीरिक, और शैतानी है।"

यूहन्ना की पहली पत्री में भी ये तीनों हैं– 1 यूहन्ना 2:15–17, "तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो। यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है। क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड, वह पिता की

ओर से नहीं परन्तु संसार ही की ओर से है। संसार और उसकी अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है वह सर्वदा बना रहेगा।"

1 यूहन्ना 3:7–10, "हे बालको, किसी के भरमाने में न आना। जो धर्म के काम करता है, वही उस के समान धर्मी है। जो कोई पाप करता है वह शैतान की ओर से है, क्योंकि शैतान आरम्भ ही से पाप करता आया है। परमेश्वर का पुत्र इसलिये प्रगट हुआ कि शैतान के कामों का नाश करे। जो कोई परमेश्वर से जन्मा है वह पाप नहीं करता; क्योंकि उसका बीज उसमें बना रहता है, और वह पाप कर ही नहीं सकता, क्योंकि परमेश्वर से जन्मा है। इसी से परमेश्वर की सन्तान और शैतान की सन्तान जाने जाते हैं; जो कोई धर्म के काम नहीं करता वह परमेश्वर से नहीं, और न वह जो अपने भाई से प्रेम नहीं रखता।"

धर्मशास्त्र में संसार से अभिप्राय है हमारा परिवेश– संस्कृति, आचार–विचार, प्रथाएं, परम्पराएं, मान्यताएं।

1 यूहन्ना 5:19, "हम जानते हैं, कि हम परमेश्वर से हैं, और सारा संसार उस दुष्ट के वश में पड़ा है।"

1 कुरिन्थियों 2:12, "परन्तु हम ने संसार की आत्मा नहीं, परन्तु वह आत्मा पाया है जो परमेश्वर की ओर से है कि हम उन बातों को जानें जो परमेश्वर ने हमें दी हैं।"

2 तीमुथियुस 3:1–5, "पर यह स्मरण रख कि अन्तिम दिनों में कठिन समय आएंगे। क्योंकि मनुष्य स्वार्थी, लोभी, डींगमार, अभिमानी, निन्दक, माता–पिता की आज्ञा टालनेवाले, कृतघ्न, अपवित्र, दयारहित, क्षमारहित, दोष लगानेवाले, असंयमी, कठोर, भले के बैरी, विश्वासघाती, ढीठ, घमण्डी, और परमेश्वर के नहीं वरन् सुखविलास ही के चाहनेवाले होंगे। वे भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर उसकी शक्ति को न मानेंगे; ऐसों से परे रहना।"

हमें देखना है कि संसार का हमारे विचारों पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

हम आराधनाओं में जाते हैं परन्तु क्या कभी सोचते हैं कि परमेश्वर हमसे बच्चों को पालन–पोषण के संबन्ध में क्या कहता है। हमारा जीवन संसार से भिन्न नहीं रह जाता है। संसार हमारे चारों ओर है।

शरीर– हमारा पुराना स्वभाव जो हमें पाप में ले चलता है– गलातियों 5:16–25, "पर मैं कहता हूं, आत्मा के अनुसार चलो तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे। क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करता है, और ये एक दूसरे के विरोधी हैं, इसलिये कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ। और यदि तुम आत्मा के चलाए चलते हो तो व्यवस्था के अधीन न रहे। शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात् व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन, मूर्त्तिपूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म, डाह, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा और इनके जैसे और–और काम हैं, इनके विषय में मैं तुम को पहले से कह देता हूं जैसा पहले कह भी चुका हूं, कि ऐसे ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे। पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, और कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम हैं; ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई व्यवस्था नहीं। और जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उसकी लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है। यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी। हम घमण्डी होकर न एक दूसरे को छेड़ें, और न ऐक दूसरे से डाह करें।"

अतः हमारे चारों ओर संसार है और हम शरीर में हैं तथा शैतान हमारे विरुद्ध है। शैतान और दुष्टात्माएं हमारे जीवन में बुराई ही को उत्पन्न करना चाहते हैं। 1 पतरस 5:8, "सचेत हो, और जागते रहो; क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाए।"

बाइबल इन तीनों पक्षों का अविभाजित वर्णन करती है। बाइबल में ये तीनों रस्सी की तीन तांत हैं। वे परस्पर संयोजित हैं। ये तीनों मनुष्य के विरुद्ध हैं।

थॉमस ब्रकुस ने अपनी पुस्तक में लिखा कि शरीर कांटा है, संसार चारा है और शैतान हमारे जीवन में लगातार यह कांटा डालता रहता है। यह एक जीवन पर्यन्त का आत्मिक युद्ध है। वह दुष्टात्मा निकालना नहीं है। यह सर्वांगीण है– पाप से संघर्ष, विश्वास का यत्न और सुसमाचार प्रचार। यहां शिष्य बनाना और आत्मिक युद्ध करना सहकारिता है। हम युद्ध में आगे रहते हैं।

कलीसिया और आत्मिक युद्ध

आत्मिक युद्ध में भागीदारी... इफिसियों 6 में परमेश्वर के हथियार की चर्चा की गई है और पौलुस हमसे जो कहता है वह यह है कि हम प्रतिक्रिया दिखाएं।

इफिसियों 6:13–15, "इसलिये परमेश्वर के सारे हथियार बांध लो, कि तुम बुरे दिन में सामना कर सको, और सब कुछ पूरा करके स्थिर रह सको। इसलिये सत्य से अपनी कमर कसकर, और धार्मीकता की झिलम पहिन कर, और पांवों में मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहिन कर..."

आपको स्मरण होगा कि यहां दो कार्य हैं– स्थिर रहो और आगे बढ़ो। पहला सुरक्षात्मक और दूसरा आक्रामक है। हमें आपातकालीन प्रतिक्रिया दिखाना है। बैठने का समय नहीं है। आप इस युद्ध से पीछे नहीं हट सकते। आपको पूरे जोश और एक जुट होकर लड़ना है। यह आज्ञा पूरी कलीसिया को दी गई है। मनुष्यों को अलग अलग नहीं दी गई है परन्तु हम युद्ध कैसे करेंगे?

युद्ध के हथियार...

परमेश्वर के हथियारों के विषय में हमें सावधान रहना है कि हम इनकी आवश्यकता से अधिक व्याख्या न करें और न ही इसके विषय निरंकुश आस्थाएं रखें।

परमेश्वर के हथियार परमेश्वर के गुणों की छाया हैं। धर्मशास्त्र में आत्मिक युद्ध रणनीति नहीं चरित्र है। हमने आत्मिक युद्ध में देखा है कि मनुष्य रणनीतियां प्रतिवादित करते हैं परन्तु धर्मशास्त्र में कोई रणनीति क्यों नहीं दी गई है? हम नये नियम में देखते हैं कि– मसीही जीवन परमेश्वर के गुणों से प्रभावित जीवन है। हमें परमेश्वर के गुणों का अनुकरण करना है। इसका एक उदाहरण यशायाह 11:5 में है, "उसकी कटि का फेंटा धर्म और उसकी कमर का फेंटा सच्चाई होगी।"

और परमेश्वर का हथियार भी है– यशायाह 59:17, "उसने धर्म को झिलम के समान पहिन लिया, और उसके सिर पर उद्धार का टोप रखा गया, उसने बदला लेने का वस्त्र धारण किया, और जलजलाहट को बागे के समान पहिन लिया है।"

विलियम गुरनल कहते हैं, "हमें परमेश्वर के हथियार में नहीं इन हथियारों के परमेश्वर में वास करना है क्योंकि हमारे हथियार परमेश्वर ही से सामर्थी होते हैं।"

यशायाह 52:7, "पहाड़ों पर उसके पांव क्या ही सुहावने हैं जो शुभ समाचार लाता है, जो शान्ति की बातें सुनाता है और कल्याण का शुभ समाचार और उद्धार का सन्देश देता है, जो सिय्योन से कहता है, "तेरा परमेश्वर राज्य करता है।"

यशायाह 49:2, "उसने मेरे मुंह को चोखी तलवार के समान बनाया और अपने हाथ की आड़ में मुझे छिपा रखा; उसने मुझ को चमकीला तीर बनाकर अपने तर्कश में गुप्त रखा।"

हथियार परमेश्वर के चरित्र और उससे सामर्थ्य की प्रतिछाया हैं। पौलुस इफिसियों को लिखता है जो आत्माओं में सामर्थ्य खोजते थे। वह कहता है कि मसीह में सामर्थ्य का स्रोत है– इफिसियों 4:7–10, "पर हम में से हर एक को मसीह के दान के परिमाण से अनुग्रह मिला है। इसलिये वह कहता है: "वह ऊंचे पर चढ़ा और बन्दियों को बांध ले गया, और मनुष्यों को दान दिए।" (उसके चढ़ने से, और क्या पाया जाता है केवल यह कि वह पृथ्वी की निचली जगहों में उतरा भी था। और जो उतर गया यह वही है जो सारे आकाश के ऊपर चढ़ भी गया कि सब कुछ परिपूर्ण करे)।"

यह सामर्थ्य का नया साधन है– इफिसियों 2:18, "क्योंकि उसी के द्वारा हम दोनों की एक आत्मा में पिता के पास पंहुच होती है।"

यह जादूई मन्त्र नहीं है और न ही परमेश्वर को कुछ करने पर बाध्य करना है। आप परमेश्वर से संपर्क करके इस सामर्थ्य का अनुभव करते हैं इसमें आप अपनी स्वार्थ सिद्धि या किसी की हानि नहीं परन्तु एक दूसरे के लिए प्रेम में आत्मत्याग करते हैं। इफिसियों 5:2, "और प्रेम में चलो जैसे मसीह ने भी तुम से प्रेम किया, और हमारे लिये अपने आप को सुखदायक सुगन्ध के लिये परमेश्वर के आगे भेंट करके बलिदान कर दिया।"

सत्य का कटिबन्ध

मैं शीघ्रता से अलग–अलग हथियारों पर ध्यान देना चाहता हूं– कटिबन्ध, झिलम, जूते, ढाल, टोप, तलवार, और इसके साथ इनमें निहित परमेश्वर का गुण और सामर्थ्य।

सत्य का कटिबन्धः पौलुस की समझ में यह प्रभु यीशु को यथार्थ में समझना है। शैतान की युक्ति है कि हम प्रभु यीशु को समझ न पाएं। हम सोचते हैं कि प्रभु यीशु को भली भांति समझना हमारे जीवन के लिए अर्थपूर्ण नहीं है। हम सब बातों की चर्चा करते हैं परन्तु प्रभु यीशु के विषय चर्चा नहीं करते क्योंकि हमारे विचार में यह हमारे जीवन से संबन्धित नहीं है जबकि सच तो यह है कि प्रभु यीशु को भली भांति जानना ही हमारे सर्वांग जीवन से संबन्धित है।

2 कुरिन्थियों 10:3–5, "क्योंकि यद्यपि हम शरीर में चलते फिरते हैं, तौभी शरीर के अनुसार नहीं लड़ते। क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, पर गढ़ों को ढा देने के लिये परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं। इसलिये हम कल्पनाओं का और हर एक ऊंची बात का, जो परमेश्वर की पहिचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।"

पौलुस झूठे शिक्षकों के प्रतिवाद में कह रहा है। ये शिक्षाएं परमेश्वर के ज्ञान से हटकर थीं। इस कारण वह इसे दृढ़ गढ़ कहता है। ये पाप नहीं है। ये झूठे शिक्षक यीशु को पूर्ण मनुष्य नहीं मानते थे।

1 यूहन्ना 4:1–3, "हे प्रियो, हर एक आत्मा की प्रतीति न करो, वरन् आत्माओं को परखो कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं; क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं। परमेश्वर का आत्मा तुम इसी रीति से पहचान सकते होः कि जो कोई आत्मा मान लेती है कि यीशु मसीह शरीर में होकर आया है वह परमेश्वर की ओर से है, और जो आत्मा यीशु को नहीं मानती, वह परमेश्वर की ओर से नहीं; और वही तो मसीह के विरोधी की आत्मा है, जिसकी चर्चा तुम सुन चुके हो कि वह आनेवाला है, और अब भी जगत में है।"

कुछ झूठे शिक्षक कहते थे कि यीशु पूर्ण परमेश्वर नहीं हैं– कुलुस्सियों 2:8–10, "चौकस रहो कि कोई तुम्हें उस तत्व–ज्ञान और व्यर्थ धोखे के द्वारा अहेर न कर ले, जो मनुष्यों की परम्पराओं और संसार की आदि शिक्षा के अनुसार है, पर मसीह के अनुसार नहीं। क्योंकि उसमें ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है, और तुम उसी में भरपूर हो गए हो जो सारी प्रधानता और अधिकार का शिरोमणि है।"

कुछ प्रभु यीशु की महानता, महिमा को कम मानते थे।

इब्रानियों 1:3–5, "वह उसकी महिमा का प्रकाश और उसके तत्व की छाप है, और सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ्य के वचन से संभालता है। वह पापों को धोकर ऊंचे स्थानों पर महामहिमन् के दाहिने जा बैठा; और स्वर्गदूतों से उतना ही उत्तम ठहरा, जितना उसने उनसे बड़े पद का वारिस होकर उत्तम नाम पाया। क्योंकि स्वर्गदूतों में से उसने कब किसी से कहा, "तू मेरा पुत्र है, आज तू मुझ से उत्पन्न हुआ?" और फिर यह, "मैं उसका पिता हूंगा, और वह मेरा पुत्र होगा?"

कुछ का कहना था कि प्रभु यीशु से ही सब कुछ नहीं होगा। कुलुस्सियों 2:16–19, "इसलिये खाने–पीने या पर्व या नए चांद, या सब्त के विषय में तुम्हारा कोई फैसला न करे। क्योंकि ये सब आनेवाली बातों की छाया हैं, पर मूल वस्तुएं मसीह की हैं। कोई मनुष्य आत्म–हीनता और स्वर्गदूतों की पूजा कराके तुम्हें दौड़ के प्रतिफल से वंचित न करे। ऐसा मनुष्य देखी हुई बातों में लगा रहता है और अपनी शारीरिक समझ पर व्यर्थ फूलता है, और उस शिरोमणि को पकड़े नहीं रहता जिससे सारी देह जोड़ों और पट्ठों के द्वारा पालन–पोषण पाकर और एक साथ गठकर, परमेश्वर की ओर से बढ़ती जाती है।"

शैतान अत्यधिक चतुर है। वह भ्रम उत्पन्न करता है जैसे, यीशु की मानवीय देह नहीं थी। ये लोग यीशु को कलीसिया से अलग कर देते हैं। कुछ लोग यीशु को दैनिक जीवन से अलग रखते हैं। कुछ लोगों का मानना है कि हमें इस जीवन में सांसारिक आनन्द लेना है। अब कुछ का मानना है कि यीशु मुझे अपने स्वयं के बारे में अच्छी अनुभूति प्रदान करता है। वह मेरा अच्छा मित्र है और इस प्रकार वे उसकी महिमा और उसकी सामर्थ्य के मूल्य से चूक जाते हैं। एक और समूह है जो यह मानता है कि कष्ट शैतानी हैं। यीशु आराम और सुख का जीवन देता है। कुछ का यह भी मानना है कि अनुग्रह केवल हमारे लिए है, हमें उसे दूसरो तक नहीं पहुंचाना है। कुछ मनुष्यों की आवश्यकता के प्रति निश्चिन्त रहते हैं। कुछ का मानना है कि क्षमा नहीं है। हमें अपने कर्मों का फल भोगना ही होगा। कुछ लोगों के विचार में यीशु हमसे प्रेम करता है और हम पाप करते रहें तो उसे अन्तर नहीं पड़ता है।

आत्मिक युद्ध में हमें इन सब झूठी शिक्षाओं का सामना करना है। फ्रांसिस शेफर कहते हैं, "सुसमाचार का महान विनाश है– विश्वासियों का सत्य के लिए खड़े न होना। कलीसिया संसार की आत्मा से ग्रस्त हो गई है... सत्य के साथ तो सामना करना होता है। सत्य के लिए सामना करना आवश्यक हैः प्रेममय सामना परन्तु सामना करना। यदि हमारी प्रतिक्रिया सदैव सत्यरहित समझौता करना है तो कुछ चूक अवश्य है।"

झूठी शिक्षा से सावधान! मत्ती 7:15–20, "झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सावधान रहो, जो भेड़ों के भेस में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु अन्तर में फाड़नेवाले भेड़िए हैं। उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे। क्या लोग झाड़ियों से अंगूर, या ऊंटकटारों से अंजीर तोड़ते हैं? इसी प्रकार हर एक अच्छा पेड़ अच्छा फल लाता है और निकम्मा पेड़ बुरा फल लाता है। अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं ला सकता, और न निकम्मा पेड़ अच्छा फल ला सकता है। जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में डाला जाता है। इस प्रकार उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे।"

झूठी शिक्षा चतुराई का काम है– यिर्मयाह 5:30–31, "देश में ऐसा काम होता है जिस से चकित और रोमांचित होना चाहिये। भविष्यद्वक्ता झूठमूठ भविष्यद्वाणी करते हैं; और याजक उनके सहारे से प्रभुता करते हैं; मेरी प्रजा को यह भाता भी है, परन्तु अन्त के समय तुम क्या करोगे?"

वह प्रभावशाली है– मत्ती 23:15, "हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम पर हाय! तुम एक जन को अपने मत में लाने के लिये सारे जल और थल में फिरते हो, और जब वह मत में आ जाता है तो उसे अपने से दूना नारकीय बना दते हो।"

इफिसियों 4:14, "ताकि हम आगे को बालक न रहें जो मनुष्यों की ठग–विद्या और चतुराई से, उन के भ्रम की युक्तियों के और उपदेश के हर एक झोंके से उछाले और इधर–उधर घुमाए जाते हों।"

झूठी शिक्षा घातक है– गलातियों 5:7–12, "तुम तो भली–भांति दौड़ रहे थे, अब किसने तुम्हें रोक दिया कि सत्य को न मानो। ऐसी सीख तुम्हारे बुलानेवाले की ओर से नहीं। थोड़ा सा खमीर सारे गूंधे हुए आटे को खमीर कर डालता है। मैं प्रभु पर तुम्हारे विषय में भरोसा रखता हूं कि तुम्हारा कोई दूसरा विचार न होगा; परन्तु जो तुम्हें घबरा देता है, वह कोई क्यों न हो दण्ड पाएगा। परन्तु हे भाइयो, यदि मैं अब तक खतना का प्रचार करता हूं, तो क्यों अब तक सताया जाता हूं? फिर तो क्रूस की ठोकर जाती रही। भला होता कि जो तुम्हें डांवांडोल करते हैं, वे अपना अंग ही काट डालते।"

पौलुस की भाषा अत्यधिक कठोर है। सत्य से भटकनेवालों को वह नामर्द बनाना चाहता है। गढ़ों को ढा दो। शैतान छल से सावधान। नये नियम में बार बार कहा गया है, "धोखा न खाओ।"